



मई: 2022

वर्ष : 5 अंक : 8

सिफरी मासिक समाचार

नील क्रांति की ओर अग्रसर



निदेशक की कलम से



संस्थान का मासिक समाचार, मई 2022 आपके समक्ष प्रस्तुत है।

मई का महीना अर्थात हिन्दी माह का वैशाख का महीना जो पश्चिम बंगाल या यूं कहिए कि पूरे भारतवर्ष के लिए एम महत्वपूर्ण माह है क्योंकि यह भारत के प्रथम नोबेल पुरस्कार विजेता गुरुदेव रबिन्द्रनाथ टैगोर का जन्म माह है। बंगाली कैलेंडर के अनुसार, रवींद्रनाथ टैगोर का जन्म दिवस “रवींद्र जयंती” इस माह 9 मई को मनाया जा रहा है।

दूसरा महत्वपूर्ण दिवस है “मदर्स डे” जो अंतर्राष्ट्रीय तौर पर दिनांक 8 मई को मनाया जाता है। वैसे तो माताओं के बारे में बताना एक कठिन कार्य है क्योंकि उनकी अर्थपूर्णता और महत्व केवल कुछ शब्दों में बयान करना असंभव है। बस इतना कह सकता हूँ कि एक माता मनुष्य के जीवन की प्रथम शिक्षक होती है।

प्रस्तुत अंक में संस्थान में निष्पादित अप्रैल 2022 माह की गतिविधियों और उपलब्धियों को बताया गया है जैसे मत्स्य प्रजातियों के संरक्षण हेतु आयोजित रैचिंग कार्यक्रम, मछुआरों के कौशल विकास हेतु प्रशिक्षण तथा संस्थान अनुसंधान समिति बैठक आदि का आयोजन किया गया।

धन्यवाद,

बि.के.दास

(बसन्त कुमार दास)

आज़ादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत सिफरी में राष्ट्रीय अभियान "अन्नदाता देवो भव" के अवसर पर प्राकृतिक पद्धति द्वारा मछली पालन पर वेबिनार

भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सिफरी) ने आज़ादी का अमृत महोत्सव के तहत "अन्नदाता देवो भव" अभियान के अवसर पर आभासी मोड में दिनांक

23 अप्रैल, 2022 को एक राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया। इस वेबिनार का विषय था - प्राकृतिक पद्धति द्वारा मछली पालन। राष्ट्र की पोषण संबंधी जरूरतों को पूरा करने में किसानों के योगदान को विशिष्ट तौर पर दर्शाने के लिए भारत सरकार ने इस राष्ट्रव्यापी अभियान की शुरुआत की है। इस अवसर पर सिफरी ने पर्यावरण संबंधी अखंडता को अक्षुण्ण रखते हुए खाद्य सुरक्षा और पोषण सुरक्षा में मछली किसानों की भूमिका और प्राकृतिक पद्धति द्वारा मछली पालन के महत्व पर प्रकाश डालने के लिए इस वेबिनार का आयोजन किया।

इस अवसर पर संस्थान के निदेशक, डॉ. बि. के. दास, ने 'प्राकृतिक पद्धति द्वारा मछली पालन' विषय पर एक व्याख्यान

प्रस्तुत दिया। इसके माध्यम से उन्होंने हमारी प्राचीन एवं पारंपरिक कृषि पद्धति के महत्व के बारे में विस्तार से बताया। अपने व्याख्यान में डॉ. दास ने 'अग्निहोत्र' पर प्रकाश डाला। अग्निहोत्र एक संस्कृत शब्द है जो दो शब्दों ('अग्नि' और 'होत्र' अर्थात उपचार) के मेल से बना है। उन्होंने प्राकृतिक खेती को अपनाने में सामुदायिक भागीदारी के महत्व के साथ जलीय पर्यावरण संरक्षण में प्राकृतिक पद्धति द्वारा मछली पालन के लाभ पर प्रकाश डाला। उन्होंने आगे कहा कि प्राकृतिक रूप से पालित मछलियों के आर्थिक रूप से अधिक लाभदायक हैं क्योंकि इसके लिए फ़ीड, उर्वरक या एंटीबायोटिक के लिए लागत की आवश्यकता नहीं होती है। हानिकारक रसायनों से मुक्त ये मछलियां विशेष रूप से बच्चों और रुग्ण व्यक्तियों के स्वास्थ्य के लिए लाभकारी हैं।

इस वेबिनार में 69 वैज्ञानिकों, 17 तकनीकी अधिकारी, 32 छात्रों और 21 किसानों सहित कुल 228 प्रतिभागियों ने भाग लिया जिसमें से 89 किसानों, मात्स्यिकी महाविद्यालयों के डीन ने ऑनलाइन मोड में भाग लिया। इस वेबिनार का एक सकारात्मक प्रभाव के साथ यह व्यक्तिगत और सामुदायिक स्तर पर प्राकृतिक मछली पालन पद्धति को प्रोत्साहित करेगा।



आजादी का अमृत महोत्सव के तहत 'किसान भागीदारी, प्राथमिकता हमारी' पर प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम का आयोजन।

भाकृअनुप-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सिफरी) ने मुख्यालय, बैरकपुर में दिनांक 25 अप्रैल, 2022 को आजादी का अमृत महोत्सव के तहत (25 से 30 अप्रैल, 2022 तक) 'किसान भागीदारी, प्राथमिकता हमारी' पर 129 छात्रों और 21 किसानों के लिए प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम का आयोजन किया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य सजावटी मत्स्य पालन और मछली के पोषण गुणों पर प्रकाश डालना है।

कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय ने 'आजादी का अमृत महोत्सव' को जन भागीदारी उत्सव के रूप में मनाने के लिए विभिन्न किसान केंद्रित अभियान, कार्यशाला, कार्यक्रम, सेमिनार, वेबिनार आदि के आयोजन के लिए एक रोडमैप तैयार किया है। इस दिशा में सिफरी ने युवाओं में मछली पालन के प्रति जागरूकता पैदा करने के लिए छात्रों और किसानों के बीच प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया। आजादी का अमृत महोत्सव के तहत 'आत्मनिर्भर भारत' अभियान देश के उन लोगों को समर्पित है, जिन्होंने भारत को विकास की नई ऊंचाइयों पर पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है तथा जिनमें इस उद्देश्य को पूरा करने की असीम क्षमता और दक्षता है। इस कार्यक्रम के माध्यम से मछली के पोषण गुणों के महत्व पर मछुआरों/मछली किसानों में जागरूकता पैदा की गई जिसमें मात्स्यिकी महाविद्यालय, राहा, असम के लगभग 23 छात्र और सुरेंद्रनाथ कॉलेज, बैरकपुर के 55 छात्र शामिल हुए।

संस्थान के निदेशक, डॉ बि के दास ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। अपने संबोधन में उन्होंने आत्मनिर्भर भारत के लिए माननीय प्रधानमंत्री के 'भारत 2.0' के दृष्टिकोण को पूरा करने के लिए 'किसान भागीदारी, प्राथमिकता हमारी' अभियान के आयोजन के महत्व पर अपना विचार व्यक्त किया। प्रश्नोत्तरी अभियान का समापन पुरस्कार वितरण के साथ किया गया।



असम के धेमाजी जिले के आर्द्रभूमि मछुआरों के बीच सिफरी केजग्रो (CIFRI CAGEGROW) फ्रीड का वितरण

भाकृअनुप-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी ने 27 अप्रैल, 2022 को असम के धेमाजी जिले में आर्द्रभूमि मछुआरों के लाभ के लिए एक फ्रीड वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम का आयोजन मोरिधल कॉलेज, धेमाजी, असम में किया गया। जिले के 50 आर्द्रभूमि मछुआरों के बीच कुल 5.25 टन सिफरी केज ग्रो (CIFRI CAGEGROW) फ्रीड वितरित किया



गया। कार्यक्रम संस्थान के निदेशक डॉ. बि.के.दास और क्षेत्रीय केंद्र गुवाहाटी के प्रमुख (कार्यवाहक) डॉ.बी.के.भट्टाचार्य के समग्र मार्गदर्शन में आयोजित किया गया था। केंद्र के वैज्ञानिक सिमंकू बोरा ने कार्यक्रम का समन्वयन किया। श्री प्रसाद बरुआ, माननीय संसद सदस्य, लखीमपुर, और डॉ. रानोज पेगू, असम के माननीय शिक्षा मंत्री और डब्ल्यूपीटीबीसी विभाग के मंत्री ने इस फ्रीड वितरण कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। कार्यक्रम में डॉ. कमल गोगोई, संस्थापक प्राचार्य (सेवानिवृत्त), मोरिधल कॉलेज, डॉ. दीपेन सैकिया, प्राचार्य, मोरिधल कॉलेज, श्री लखीनाथ लगाचू, डीएफडीओ, धेमाजी, श्री प्रदीप बोरुआ, प्राचार्य, मोरीधल एच.एस. स्कूल, श्री दीपांकर सैकिया, एफडीओ, श्री गणेश बोरा, एफडीओ, सुश्री शिल्पा रानी हजारिका, एफडीओ और सुश्री प्रतिशा हांडिक, जेई, डीओएफ, धेमाजी भी उपस्थित थे।

डॉ. सिमंकू बोरा ने अतिथि और प्रतिभागियों का स्वागत किया और कार्यक्रम की उद्देश्य की व्याख्या की। उन्होंने सिफरी और पूर्वोत्तर क्षेत्र के मात्स्यिकी क्षेत्र के विकास के लिए इसकी गतिविधियों के बारे में एक संक्षिप्त विवरण भी दिया। उनके संबोधन में सिफरी द्वारा विकसित विभिन्न तकनीकों जैसे केज कल्चर, पेन कल्चर, केजग्रो फीड पर भी प्रकाश डाला गया।

अपने व्याख्यान में, माननीय सांसद, लखीमपुर, श्री प्रसाद बरुआ ने लोगों से वैज्ञानिक मछली पालन प्रथाओं को अपनाने का आग्रह किया और ग्रामीण रोजगार और आजीविका में मत्स्य पालन की भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने ऊपरी असम क्षेत्र में मत्स्य पालन क्षेत्र के विकास की दिशा में सिफरी द्वारा की गई पहल की सराहना की। श्री लखीनाथ लगाचू, डीएफडीओ, धेमाजी ने अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालन के लिए पीएमएमएसवाई योजनाओं के अवलोकन पर एक व्याख्यान दिया और प्रतिभागियों से सरकार द्वारा बनाई गई कल्याणकारी योजनाओं का लाभ लेने का आग्रह किया। उन्होंने असम में मत्स्य विभाग द्वारा की जाने वाली विभिन्न गतिविधियों का भी संक्षेप में वर्णन किया। डॉ. रनोज पेगू, असम सरकार के माननीय शिक्षा मंत्री और डब्ल्यूपीटीबीसी विभाग मंत्री ने अपने संबोधन में जिले के मछुआरों/मछली किसानों से वैज्ञानिक कृषि पद्धतियों को अपनाने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि असम के धेमाजी जिले में मछली उत्पादन में आत्मनिर्भरता हासिल करने की तत्काल आवश्यकता है, क्योंकि इस जिले में मछली की मांग का एक बड़ा हिस्सा आयात के माध्यम से पूरा किया जाता है। उन्होंने असम के धेमाजी जिले के मछुआरों के लिए सिफरी द्वारा किए गए इस फ्रीड वितरण कार्यक्रम की भी सराहना की। श्री गणेश बोरा, एफडीओ, डीओएफ, धेमाजी ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

रेशम कीट अपशिष्ट से मत्स्य आहार विकसित:: कचरे से कंचन मिशन के अंतर्गत एक पहल

रेशम कीट प्यूपा रेशम उद्योग के अपशिष्ट पदार्थ के तौर पर जाना जाता है। भारत में रेशम कीट के अपशिष्ट के पांच प्रकार होते हैं जिनमें सबसे अधिक शहतूत से पाया जाता है। इन संभावित अपशिष्ट संसाधनों को राजस्व प्राप्ति के लिए एक रणनीति बनाने की आवश्यकता है। इस दिशा में भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सिफरी), बैरकपुर ने केन्द्रीय तसर अनुसंधान और प्रशिक्षण संस्थान



(सीटीआरटीआई), रांची के साथ "मानव और जीव उपभोग तथा वानस्पतिक खाद के लिए रेशमकीट प्यूपा उत्पादों का उपयोग और विविधीकरण" पर एक सहयोगी परियोजना का पहल किया है। हालांकि सिफरी अपशिष्ट पदार्थ से मत्स्य आहार तैयार करने संबंधी ऐसे अभिनव कार्य के साथ वर्ष 2009 से प्रयासरत है जिसके अंतर्गत मद्यशाला के अपशिष्ट पदार्थ तथा ब्लैक सोल्जर फ्लाई और रेशम कीट प्यूपा

से मत्स्य आहार तैयार किया जाता है। संस्थान ने मद्यशाला के अपशिष्ट पदार्थ से एक फ्रीड, सिफरी केजग्रो (CIFRI CAGE GROW) का व्यवसायीकरण किया है।

संस्थान मुख्यालय, बैरकपुर में दिनांक 26 अप्रैल 2022 को इस सहयोगी परियोजना के लिए एक समीक्षा बैठक आयोजित की गई। कार्यक्रम का शुभारंभ सिफरी के निदेशक डॉ. बि. के. दास के स्वागत भाषण से किया गया जिसमें उन्होंने सर्वप्रथम सीटीआरटीआई, रांची के निदेशक, डॉ. के. सत्यनारायण तथा डॉ. के. जेना, वैज्ञानिक-डी सहित उपस्थित वैज्ञानिकों और मत्स्य किसानों का स्वागत किया। डॉ. दास



ने चयनित मछली प्रजातियों के लिए कम लागत वाली मछली फ्रीड के संदर्भ में रेशम उद्योग अपशिष्ट के प्रभावी उपयोग पर जोर दिया। परियोजना के प्रधान अन्वेषक के तौर पर डॉ. दास ने अपनी प्रस्तुति में परियोजना गतिविधियों का मूल्यांकन किया और चयनित मछली प्रजातियों के लिए रेशम कीट प्यूपा से बने आहार (एसडब्ल्यूपीएम) की व्यवहार्यता तथा परीक्षण जैसी महत्वपूर्ण उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। इस संदर्भ मरीन कुल चार प्रकार की पैलेट फ्रीड तैयार की गई है – रेशमीन- 1 मिमी (चारा मछलियों के लिए), रेशमी अमृत - 2 मिमी (अंगुलिकाओं के लिए), रेसमीन गोल्ड+ - 3 मिमी (पोना मछलियों के लिए) और रेशमीन गोल्ड - 4 मिमी (पोना और ब्रूड मछलियों के लिए)। विकसित फ्रीड का परीक्षण तिलापिया नाइलोटिकस और पंगेसियानोडोन हाइपोथाल्मस मछलियों में किया गया। प्रयोगशाला में फ्रीड परीक्षण के तहत तुलनात्मक वृद्धि और उत्तरजीविता देखी गई। झारखंड के माईथन जलाशय में स्थापित पिंजरो में सर्वोत्तम मत्स्य आहार के साथ परीक्षण किया गया जिसमें विकास प्रदर्शन उत्तम पाया गया। यह फ्रीड कार्प, शाकाहारी और सर्वाहारी मछली प्रजातियों में समान रूप से प्रभावी पाया गया। इस कार्यक्रम में मछली किसानों को उनके जल निकायों में परीक्षण के लिए 30 किलो चारा वितरित किया गया। अतः वर्तमान परीक्षण से रेशम कीट अपशिष्ट से सुरक्षित और प्रभावी मछली आहार से मछुआरों की आय को दोगुना किया जा सकता है। कार्यक्रम में सह-प्रधान अन्वेषक, डॉ एम ए हसन, प्रभागाध्यक्ष, डॉ डी के मीणा, वैज्ञानिक, डॉ राहुल दास, वैज्ञानिक सहित परियोजना टीम ने भाग लिया। इस कार्यक्रम में सुंदरबन तथा पश्चिम बंगाल के विभिन्न स्थानों से 30 प्रगतिशील मछली किसानों ने भाग लिया।

संस्थान अनुसंधान समिति की बैठक



वर्ष 2021-22 के लिए संस्थान अनुसंधान समिति की बैठक 21-23 अप्रैल 2022 के दौरान संस्थान मुख्यालय में आयोजित की गई। बैठक का शुभारंभ संस्थान अनुसंधान समिति (आईआरसी) के सदस्य सचिव, डॉ. अरुण पंडित के स्वागत भाषण से किया गया। उन्होंने संस्थान में क्रियान्वित की जा रही परियोजनाओं के बारे में जानकारी दी। इसके बाद निदेशक, डा. वि. के. दास ने संस्थान के अनुसंधान, विकास, प्रसार और अन्य गतिविधियों के बारे में संक्षिप्त विवरण दिया। उन्होंने कहा कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद/भारत सरकार को सभी समयबद्ध और रिपोर्टिंग कार्यों को सर्वोच्च प्राथमिकता देना चाहिए। संस्थान के निदेशक और इस समिति के अध्यक्ष ने विचारों और शोध कार्यों के आदान-प्रदान के लिए विदेशी शोधकर्ताओं के साथ समन्वय के लिए प्रेरित किया। उन्होंने आग्रह किया कि मछलियों सैपलिंग के समय राज्य विभाग के साथ निकट संपर्क बनाए रखा जाए। डॉ. ए.के. दास, सदस्य सचिव, अनुसंधान सलाहकार समिति (आरएसी) ने इस वर्ष आयोजित आरएसी बैठकों की सुझावों पर प्रकाश डाला। अध्यक्ष ने निर्देश दिया कि सिफरिशों को वर्तमान परियोजनाओं में शामिल किया जाना चाहिए। प्रभागाध्यक्षों और केंद्र प्रमुखों ने भी अपनी टिप्पणी प्रस्तुत की। इसके बाद वैज्ञानिकों ने अपनी उपलब्धियों और भविष्य की कार्य योजना को चर्चा के लिए प्रस्तुत किया। आईआरसी में नए परियोजना प्रस्ताव भी प्रस्तुत किए गए।

गोपालगंज, बिहार के मछली किसानों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति उन्नयन हेतु कौशल विकास कार्यक्रम



भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यकी अनुसंधान संस्थान (सिफरी) के मुख्यालय बैरकपुर में गोपालगंज, बिहार के मत्स्य किसानों के लिए " अन्तर्स्थलीय मात्स्यकी प्रबंधन" पर सात दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन दिनांक 19-25 अप्रैल, 2022 के दौरान किया गया। इस प्रशिक्षण में गोपालगंज से 21

किसानों ने भाग लिया। गोपालगंज जिला लगभग 997.8 हेक्टेयर का ताजा जल संसाधन क्षेत्र (चौर और मन क्षेत्र) से समृद्ध है जिसमें अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालन विकास के माध्यम से मछुआरों की आजीविका सुधार की पर्याप्त संभावनाएं हैं। वर्ष 2016-17 से संस्थान ने अन्तर्स्थलीय





मात्स्यिकी प्रबंधन पर गोपालगंज जिले के 111 किसानों को प्रशिक्षित किया है। इस प्रशिक्षण के उद्घाटन सत्र में संस्थान के निदेशक डॉ. वि. के. दास ने प्रतिभागियों के साथ बातचीत की और उन्हें अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी प्रबंधन पर ज्ञान और कौशल विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया जो उन्हें रोजगार और आजीविका सुरक्षा पैदा करने में मदद करेगा। डॉ. दास ने प्रशिक्षुओं को भारत के अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालन में उपलब्ध नए उद्यमशीलता के अवसरों के बारे में भी जानकारी दी।

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में किसानों को मछली चारा प्रबंधन, मत्स्य रोग संक्रमण प्रबंधन, मिट्टी और जल रसायन विज्ञान, प्रेरित प्रजनन, मिश्रित मछली पालन, सजावटी मत्स्य पालन, घेरे में मछली पालन, मत्स्य पालन का आर्थिक मूल्यांकन, प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना के साथ व्यावहारिक सत्र जैसे जल गुणवत्ता मूल्यांकन, मछली फीड तैयार करना, प्राकृतिक तौर पर उपलब्ध मछली खाद्य जीव आदि पर प्रकाश डाल गया। इस दौरान प्रशिक्षुओं ने फील्ड एक्सपोजर और सजावटी मछली हैचरी का दौरा किया। प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षुओं ने 23 अप्रैल, 2022 को 'अन्नदाता देवो भव' अभियान के तहत संस्थान द्वारा आयोजित प्राकृतिक पद्धति से मत्स्य पालन कार्यक्रम में भाग लिया जिसमें उन्हें प्राकृतिक पद्धति से मछली पालन

के लाभों और आवश्यकताओं के महत्व के बारे में बताया गया। प्रशिक्षण के समापन दिन (25 अप्रैल, 2022) को उन्होंने 'आजादी का अमृत महोत्सव' के तहत 'किसान भागीदारी, प्राथमिक हमारी' अभियान में 'सजावटी मत्स्य पालन और मछली के पोषण महत्व' पर आयोजित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में भी भाग लिया।

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य कक्षा सत्र के अलावा ऑन-फील्ड एक्सपोजर और फील्ड प्रदर्शन के माध्यम से तालाबों और टैंकों सहित खुले पानी में मछली उत्पादन बढ़ाने के लिए किसानों के व्यावहारिक कौशल को मजबूत करना है जिससे मत्स्य किसानों की आजीविका में सुधार किया जा सके।



भाकृअनुप-सिफरी द्वारा पश्चिम बंगाल के डूमा आर्द्रभूमि में मत्स्य हावैस्ट मेला का भव्य आयोजन



भाकृअनुप-सिफरी पश्चिम बंगाल के विभिन्न आर्द्रभूमियों में अनुसूचित जनजाति उपयोजना कार्यक्रम (एससीएसपी) के तहत आर्द्रभूमि में उत्पादन बढ़ाने की रणनीति पर काम कर रहा है। पश्चिम बंगाल के उत्तर 24 परगना में स्थित डूमा एशिया की सबसे बड़ी घोड़े की नाल के आकार की आर्द्रभूमियों में से एक है, जिसका क्षेत्रफल 257 हेक्टेयर है और पानी की गहराई 8 - 17 फीट है। डूमा फिशरमेन्स कोऑपरेटिव सोसाइटी लिमिटेड आर्द्रभूमि के प्रबंधन कार्य से युक्त है। 30 महिला मछुआरों सहित 1081 सदस्य इसमें शामिल हैं। डूमा आर्द्रभूमि के आसपास के 9 गांवों के मछुआरे परिवार पूरी तरह से इस आर्द्रभूमि पर निर्भरशील हैं।

भाकृअनुप-सिफरी ने फरवरी 2021 में निदेशक डॉ. बि.के.दास की प्रेरणा और नेतृत्व में उत्पादन वृद्धि प्रदर्शन के लिए इस आर्द्रभूमि में काम शुरू किया और तीन साल की अवधि के भीतर मछली उत्पादन को 1000 किग्रा/हेक्टेयर/वर्ष तक बढ़ाने के लक्ष्य के साथ पेन कल्चर प्रदर्शन

की भी शुरुवात की। पेन कल्चर प्रदर्शन के लिए 0.1 हेक्टेयर के छह सिफरी एचडीपीई@पेन स्थापित किए गए जिनमें पाँच पेन में भारतीय मेजर कार्प (1,20,000 संख्या/लगभग 710 किग्रा) और ग्रास कार्प (12,000 संख्या/लगभग 70 किग्रा) की अंगुलिमीन स्थापित किए गए। एक पेन में छोटी देशी मछली (एसआईएफ) सिस्टोमस सरना (19,250 संख्या लगभग 55 किग्रा) के मछली के बीज स्टॉक किए गए। एस. सराना, जिसे स्थानीय रूप से सर पुंटी के नाम से जाना जाता है, एक ऑटो ब्रीडर और सूक्ष्म पोषक तत्वों से भरपूर मछली है। इस प्रकार,





सिफरी छोटी देशी मछली (एसआईएफ) के उत्पादन को बढ़ाने और ग्रामीण परिवारों को अतिरिक्त पोषण सुरक्षा प्रदान करने के लिए आर्द्रभूमि मत्स्य पालन में सरना मॉडल को बढ़ावा दे रहा है। तकनीकी सहायता और मार्गदर्शन के अलावा, सिफरी ने मछली फीड (लगभग 9.0 टन) और मछली बीज जैसे इनपुट भी प्रदान किए। सिफरी की सहायता से आर्द्रभूमि सहकारी समिति ने मछलियों को पेन में 35-40 ग्राम के आकार तक बढ़ा किया और उसके बाद आर्द्रभूमि में छोड़ दिया।

जुलाई 2021 में मछली की पहली पकड़ में लगभग 64 टन मछली पकड़ी गई जिसकी कीमत लगभग रु 52 लाख थी। अत्यधिक वर्षा के कारण मानसून के बाद नवंबर 2021 में पकड़ नहीं की गई थी। इस वर्ष, सहकारी समिति द्वारा पिछले फरवरी 2022 से मछली की पकड़ शुरू की गई है। 18 अप्रैल 2022 को सहकारी समिति के सक्रिय समर्थन के साथ पकड़ के 63 वें दिन, सिफरी द्वारा मत्स्य हार्वेस्ट मेला का आयोजन किया गया। इस हार्वेस्ट मेला के अवसर पर उन्होंने भारतीय प्रमुख कार्प (आईएमसी) और अन्य देशी मछलियों सहित लगभग 250



किलोग्राम मछलियों की पकड़ की। इन 2 महीने की लंबी पकड़ अवधि के दौरान, उन्होंने लगभग 30 लाख मूल्य की 15 टन व्यावसायिक मछली की पकड़ की है। मछलियों को स्थानीय बाजार और मछली डीलरों को बेचा गया। आईएमसी का बाजार मूल्य 200-250 / किग्रा रुपये होता है। इस आर्द्रभूमि में कुछ उच्च मूल्य वाले देशी मछलियाँ भी पाई जाती हैं जैसे स्नेकहेड (रुपये 350-400/किग्रा), नोटोपेट्रेस एसपीपी (250-300/किग्रा) अनाबास टेस्टुडीनस (250-300/किग्रा) और कैटफिश (450-500/किग्रा)। हालाँकि बाढ़ के दौरान



समिति को भारी नुकसान का सामना करना पड़ा, फिर भी मछुआरों को कुल 79 टन मछलियाँ मिलीं, जो 82 लाख रुपये का लाभ देती हैं। जबकि वर्ष 2020-21 और 2019-20 में उन्होंने लगभग 73 टन और 87 टन मछली की पकड़ की थी।

इसके अलावा, 500 से अधिक सक्रिय मछुआरे नियमित रूप से छोटी देशी मछलियों जैसे गुडुसिया छपरा, एंब्लीफरीगोडन मोला, सिस्टोमस सरना, पुंटियस एसपीपी, ग्लोसोगोबियस ग्यूरिस, मैक्रोग्रेथस एसपीपी, कैटफिश, छोटे आकार के मुरल आदि मछली की पकड़ में शामिल हैं। औसतन, वे साल में लगभग 300 दिनों के लिए इस आर्द्रभूमि से एसआईएफ 3-4 किग्रा/दिन/व्यक्ति पकड़ते हैं। कुल एसआईएफ कैच का लगभग 20% अपने स्वयं के उपभोग के लिए उपयोग किया जाता है और बाकी को स्थानीय बाजार में 100-250 / किग्रा रुपये की कीमत पर बेचा जाता है। इस प्रकार, एसआईएफ मछली पकड़ने से प्रति वर्ष लगभग 10.0 करोड़ रुपये का उत्पादन हो रहा है, जो स्थानीय मछुआरों की आजीविका का समर्थन करता है। आर्द्रभूमि में ईकोरिनिया प्रजाति के मैक्रोफाइट से प्रभावित थी। सिफरी ने उन्हें मैक्रोफाइट को हटाने की सलाह दी। आम तौर पर मछुआरे एक छोटे क्षेत्र से जलीय वनस्पति को साफ करते हैं फिर मछली पकड़ते हैं।

डूमा में 18. 04. 2022 में मत्स्य हार्वेस्ट मेला के दौरान, सिफरी के माननीय निदेशक महोदय डॉ. बि. के. दास ने मछुआरों को सलाह दी कि वे अपनी आय में वृद्धि और छोटी मछलियों के संरक्षण के लिए आर्द्रभूमि में ऑटो-स्टॉक किए गए उच्च मूल्य वाले स्वदेशी प्रजाति के



माइनर कार्प को अपनाएं। उन्होंने आर्द्रभूमि में जलमग्न मैक्रोफाइट को नियंत्रित करने के लिए जैविक नियंत्रण तंत्र के रूप में ग्रास कार्प को स्टॉक करने की भी सलाह दी। मेले में वैज्ञानिकों और तकनीकी विशेषज्ञों की एक टीम मौजूद थी और उन्होंने मछुआरों को सलाह दी कि वे सिफरी प्रौद्योगिकियों को अपनाएं और अपने लाभ से कुछ राशि बचाकर पेन/आर्द्रभूमि में मछली भंडारण के लिए उपयोग करें। इस आर्द्रभूमि के मछुआरे आर्द्रभूमि के विकास के लिए सिफरी के आभारी हैं। डॉ. ए. के. दास, सुश्री प्रजना आर. स्वैन, डॉ.श्रेया भट्टाचार्य, और सुश्री सुप्रीति बाएन सिफरी की तकनीकी टीम का हिस्सा थे। कार्यक्रम का संचालन डॉ. पी. के. परिदा ने किया।

संस्थान ने पश्चिम बंगाल के पंचपोटा और मेडिया आर्द्रभूमि में जलवायु उन्मुख मत्स्य पालन का प्रदर्शन

पिछले कुछ दशकों में वैश्विक तौर पर जलवायु परिवर्तन और इसके प्रभाव आलोचना के विषय रहे हैं क्योंकि इससे लोगों के खाद्य उत्पादन, आय, आजीविका और पोषण सुरक्षा बहुत अधिक प्रभावित हुये हैं। आईपीसीसी 2021 की रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 1970 के बाद से वैश्विक तौर पर सतही तापमान में तेजी से वृद्धि हुई है। 21वीं सदी (2001-2020) के अंतिम दो दशकों में, वैश्विक सतही तापमान में +0.99 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि दर्ज की गयी, जो जलवायु परिवर्तन को इंगित करती है। जलवायु परिवर्तन से जल के तापमान, जल स्तर और अन्तर्स्थलीय जल के प्रवाह मार्ग में परिवर्तन आ सकता है जिससे जलीय पारिस्थितिकी और मत्स्य पालन पर गंभीर प्रभाव पड़ेगा। भारत में अन्तर्स्थलीय



खुलाजल संसाधन मछली उत्पादन के लिए महत्वपूर्ण संसाधन हैं जो अत्यधिक मछली पकड़ने, प्रदूषण, जैव विविधता की हानि, विदेशी प्रजातियों द्वारा परभक्षण, तलछात में गाद का जमाव और मत्स्य आवास कम होते जा रहे हैं। मानवजनित कारक आदि के साथ-साथ जलवायु परिवर्तन का प्रभाव इन पारिस्थितिक तंत्रों को और भी अधिक कमजोर बना रहा है, जिससे लाखों मछुआरों की आय और आजीविका घट रही है। अन्तर्स्थलीय खुले जल पर प्रमुख प्रभाव जैसे जल प्रवाह में परिवर्तन, परिवर्तित जल विज्ञान, ऊष्मीय तनाव, प्राकृतिक आपदाएँ, मत्स्य आवास का क्षरण, प्रजनन काल

और प्रजनन व्यवहार में परिवर्तन आदि लक्षण शामिल हैं, जिससे जलीय जैव विविधता और मत्स्य पालन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। जलवायु परिवर्तन के कारण अन्तर्स्थलीय खुले मात्स्यिकी विशेष रूप से बाढ़कृत मैदानी आर्द्रभूमि पर विनाशकारी प्रभाव पड़ रहा है, जैसे - मछलियों की संख्या में गिरावट, प्रजनन चक्र में बदलाव, पारिस्थितिकी तंत्र और इस पर आश्रित मछुआरों की आय आदि में कमी। अतः जलवायु अनुकूल रणनीतियों को विकसित और प्रदर्शित करने तथा बदलते जलवायु के संदर्भ में मछुआरों की क्षमता में वृद्धि के लिए उन्हें जागरूक बनाना अनिवार्य है। पेन में मछली पालन एक घिरे हुए स्थान में किया जाता है और इसके लिए संस्थान ने पश्चिम बंगाल, असम और केरल की आर्द्रभूमि में स्वदेशी मत्स्य प्रजातियों के संरक्षण के लिए मछली और कवच मछली पालन आदि पेन पालन शुरू किया है। बदलते जलवायु के अनुकूल होने के लिए पेन और पिंजरा में जलवायु प्रभावित स्वदेशी मछली प्रजातियों का संचयन किया जाता है।

इस दिशा में सिफरी ने 29 से 30 अप्रैल, 2022 को किसान भागीदारी और आजादी का अमृत महोत्सव के रूप में "जलवायु प्रभावित अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालन" और जलवायु प्रभावित निकायों में संचयन कार्यक्रम का आयोजन किया। निक्का (एनआईसीआरए) परियोजना के तहत पंचपोटा और मेडिया आर्द्रभूमि, उत्तर 24 परगना, पश्चिम बंगाल में यह आयोजित किया गया। इस अभियान में क्लाइमेट रेजिलिएंट पेन कल्चर सिस्टम (सीआरपीएस) की स्थापना, मछलियों के विकास के लिए उच्च प्रोटीन फीड का वितरण, सीआरपीएस और पिंजरों में जलवायु प्रभावित स्वदेशी मछलियों का भंडारण और हितधारकों के साथ बैठक कर उन्हें जलवायु प्रभावित रणनीतियों और अनुकूलन प्रौद्योगिकियों के बारे में जागरूक करना शामिल था। सिफरी के निदेशक डॉ. बि. के. दास के मार्गदर्शन में यह कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में डॉ. उत्तम कुमार सरकार, प्रभागाध्यक्ष तथा परियोजना के प्रधान अन्वेषक ने आर्द्रभूमि मत्स्य पालन और जलवायु परिवर्तन के प्रभाव पर प्रकाश डाला। पंचपोटा आर्द्रभूमि में तीन सीआईएफआरआई एचडीपीई पेन (0.1 हेक्टेयर प्रत्येक) और मेडिया आर्द्रभूमि में छह सीआईएफआरआई जीआई केज स्थापित किए गए। पंचपोटा में जलवायु उन्मुख पेन और मेडिया में जलवायु उन्मुख पिंजरों (सीआरपीएस) में लगभग 90 किलोग्राम लेबियो बाटा, पुंटियस सराना और ओमपोक बिमाकुलैटस के बीजों को संचयित किया गया और 3 टन सीआईएफआरआई केजग्री फीड वितरित किया गया। इस कार्यक्रम में कुल 70 मछुआरों ने भाग लिया।



मुख्य शोध उपलब्धियां

- पश्चिम बंगाल में गर्मी के महीने में जल का तापमान 31-33 डिग्री सेंटीग्रेड के बीच पाया गया। इस दौरान दो बाढ़कृत मैदानी क्षेत्र (खोलसे और भोमरा बील) से ग्रीन हाउस गैस (मिथेन और कार्बन डाई ऑक्साइड) उत्सर्जन का अध्ययन किया गया था। परिणाम यह बताते हैं कि भोमरा बील की तुलना में मिथेन का उत्सर्जन (19-52 मिलीग्राम प्रति वर्ग मीटर प्रति घंटा) की तुलना में खोलसे बील (24-79 मिलीग्राम प्रति वर्ग मीटर प्रति घंटा) अधिक दर्ज किया गया। हालांकि, कार्बन डाई ऑक्साइड का उत्सर्जन भोमरा बील में तुलनात्मक तौर पर अधिक (18-44 मिलीग्राम प्रति वर्ग मीटर प्रति घंटा) पाया गया जो खोलसे में (6-20 मिलीग्राम प्रति वर्ग मीटर प्रति घंटा) था।
- पश्चिम बंगाल के तीन जिलों में नौ आर्द्रभूमि में सुभेद्यता का आंकलन किया गया। हितधारकों के अनुसार, 9 में से 6 आर्द्रभूमि (66.6%) को अत्यधिक असुरक्षित और शेष को मध्यम रूप से प्रदूषित पाया गया। धारणा-आधारित भेद्यता स्कोर के अनुसार 9 आर्द्रभूमि (55.6%) में से 5 अत्यधिक असुरक्षित और 4 आर्द्रभूमि को मध्यम रूप से प्रदूषित पाई गई।
- जलदापारा राष्ट्रीय उद्यान में नदियों के सर्वेक्षण से पता चला कि अब तक नौ मछली प्रजातियों की रिपोर्ट उपलब्ध नहीं है। इन प्रजातियों में चागुनियस निकोल्सी, हाइप्सेलोबारबस मुसुल्लाह, लेबियो डायोचिलस, ओरिचथिस कोसुआटिस, बारिलियस वाग्रा, शिस्टुरा चिंडविनिका, ओमपोक पाबदा, एरेथिस्टोइड्स सिकुला, ग्लाइटोथोरैक्स गढ़वाली प्रमुख हैं।
- बिहार के नागी और नाकटी पक्षी अभयारण्य का प्लवक विश्लेषण किया गया। इसमें यह देखा गया कि मानसून के बाद के पादपप्लवक (126 प्रतिशत) तथा जन्तुप्लवक (300 प्रतिशत) की बहुतायत में वृद्धि और मछली की प्रचुरता में कमी (68 प्रतिशत) पाई गई। इस विश्लेषण में जन्तुप्लवक के प्रजनन चरण जैसे अंडों की उच्च सांद्रता और कॉपपोड और क्लैडोकेरन के जीवन चक्र को देखा गया। यह जन्तु प्लवक इन अभयारण्यों में प्रवासी पक्षियों के लिए उपलब्ध पोषक तत्व हैं।
- मार्च 2022 के दौरान गंगा नदी के प्रयागराज खंड से अनुमानित मछलियों की लैंडिंग 12.102 मीट्रिक टन थी। मार्च 2021 की तुलना में कुल मछली पकड़ में लगभग 73.00 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है।

बैठकें

- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 21 मार्च, 2022 को भारतीय विज्ञान कांग्रेस संस्था की कार्यकारी समिति की बैठक में भाग लिया।
- संस्थान ने वर्चुअल मोड में दिनांक 22 मार्च 2022 को बीआईएस पोर्टल पर पंजीकरण के लिए जैव विविधता अनुभागीय समिति की पहली बैठक में भाग लिया।

- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 26 मार्च, 2022 को भाकृअनुप सोसायटी की वार्षिक आम सभा में वर्चुअल मोड में भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 1 अप्रैल 2022 को भाकृअनुप-सीफा, भुवनेश्वर के स्थापना दिवस कार्यक्रम में भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 9 अप्रैल, 2022 को राष्ट्रीय पर्यावरण विज्ञान अकादमी, (एनईएसए), पश्चिम बंगाल चैप्टर, भारतीय विज्ञान समाचार संघ (आईएसएनए) द्वारा आयोजित "जलीय पर्यावरण" पर संगोष्ठी में भाग लिया और एक विशेष प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम

- असम ग्रामीण आजीविका मिशन और मात्स्यिकी विभाग, दक्षिण सलमारा जिले के सहयोग से "आजीविका सुधार और ग्रामीण विकास के लिए घरेलू सजावटी मछली पालन" पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन दिनांक 28-30 मार्च, 2022 के दौरान हत्सिंगिमारी में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में 30 महिला मछुआरा तथा 10 स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) ने भाग लिया।
- बिहार के शेखपुरा जिले के मछली किसानों के लिए "अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन" दिनांक 31 मार्च से 6 अप्रैल 2022 के दौरान 7 दिवसीय मत्स्य विभाग, बिहार द्वारा प्रायोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया था जिसमें 30 मछुआरों ने भाग लिया।
- बिहार के गोपालगंज जिले, मछली किसानों के लिए दिनांक 19 से 25 अप्रैल, 2022 के दौरान "अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन" पर 7 दिवसीय मत्स्य विभाग, बिहार द्वारा प्रायोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें गोपालगंज के 20 मछुआरों ने भाग लिया।
- संस्थान ने दिनांक 15-17 अप्रैल 2022 तक बिहार के पूर्वी चंपारण जिले के कृषि विज्ञान केंद्र, पिपराकोठी में आयोजित पशु आरोग्य मेला सह कृषि उन्नति मेला में भाग लिया।
- संस्थान ने वर्ल्ड फिश सेंटर के सहयोग से आयोजित कार्यक्रम में सहयोगी परियोजनाओं की प्रगति पर चर्चा करने के लिए वर्चुअल मोड में वर्ल्ड फिश सेंटर के साथ एक बैठक में भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 13 अप्रैल 2022 को एनएससी कॉम्प्लेक्स नई दिल्ली में आयोजित कृषि विश्वविद्यालयों के कुलपतियों और भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अधीनस्थ संस्थानों के निदेशकों के वार्षिक सम्मेलन में भाग लिया।
- संस्थान ने दिनांक 19 अप्रैल 2022 को एकीकृत कृषि क्लस्टर पर राज्य स्तरीय संचालन समिति की पहली बैठक में भाग लिया।
- परिसर को प्लास्टिक से मुक्त रखने के प्रयासों के साथ-साथ संस्थान परिसर में नियमित रूप से साफ-सफाई की गई। स्वच्छ भारत अभियान के "कार्यालय अभिलेखों के डिजिटलीकरण" हेतु संस्थान की सेवा पुस्तिकाओं और वार्षिक प्रदर्शन मूल्यांकन रिपोर्ट (APAR) का डिजिटलीकरण किया जा रहा है। इस वर्ष में मार्च से अप्रैल तक 25 एपीएआर और 05 सेवा पुस्तकों को डिजिटल किया गया है।

सिफरी समाचार पत्रों एवं संचार माध्यम में

बर्तमान

इलिशेर उৎपादन बाड़ाते एव डिमपोना तैरि करे गङ्गाय छाड

अलकात निरोगी • विधानसभार

बाङ्गालि सभे इलिशेर संपर्क क्रिस्ता: ता यनि आषार आमानेने केना गङ्गा इलिश हय, हाइले तो 'अनुत्समान' किछु यत निन याओ, ततई कमाहे गङ्गा इलिशेर परिमाण। तई गङ्गा इलिशेर उत्पादन बाड़ाते नया पनकषेण करछे सिफरि (आईएसआर-सेटल इन्फ्यात निशारि रिपार्ट इन्फ्लिउएँ)। एषार उद्योग इलिशेर डिमपोना तैरि करे गङ्गाय छाडहे एई बेङ्गीर गवेषणा सङ्घ। गङ्गा खेके डी इलिशेर डिम एव पुकव इलिशेर मिर्क (डिम निश्चित करेने जना माहुरे शरीर खेके निश्चित पनष) सङ्घे करे उद्योग निवेक प्रक्रिया योनाये हओ। एउावे तैरि हओ इलिशेर डिमपोना। सेई डिमपोना बाडात गङ्गा नरोगी। एई नरोग

पाँच लक्ष डिमपोना छाडा हओये। सिफरि सूत्रे जना गिओये, यङ्गाका ब्यापारकेर आउम छिओ (ए राओ प्रवृत्ति गङ्गा) सङ्घेरे बेनि इलिश

सुक करे उन्नत प्रसेशेर केनारसु ए एनाहावस पनष इलिश पाङ्गा सेता एन आप छिओ केवल विहार पनष आसे इलिश पाङ्गा या। यर मूल परिहिते गङ्गा इलिशेर बाड़ाते बाराकपुरे अरुई कर्तृपक इतिमायेई तिनः हाबार इलिशेर छाटा खेके छाडाव विहारेके माहुरेपण, उन्नत प्रसेशेर केने एनाहावसे उन्नत छाडुरे नेओया हओये। एर पाशापार्ता जामेने एई छाटा इलिशेर 'जागि' करे नेओया हओ।

एई प्रकृतेर पनषापी उद्योग इलिशेर डिमपोना कृत नरुन परिकरना नेओ सिफरि कर्तृपक जनिओये एव योनायनि खेके पुनर्प इलिशेर मिर्क एव डी इलि सङ्घे करे उन्नत प्रसेश क निवेक (फाउन्डिओन) हओ। तसपुन डिमपोना ह हओ। सेई छाडुरि करे डिमपोना (इन्फ्लिउएँ)। पाँच बाडात गङ्गा नरोग



सन्मार्ग

प्राकृतिक पद्धति द्वारा मछली पालन पर वेबिनार

सन्मार्ग संवाददाता

बैरकपुर : भाकू अनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मत्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सिफरी) ने आजादी का अमृत महोत्सव के तहत 'अन्नदाता देवो भव' अभियान के अवसर पर बैरकपुर के आभासी मोड़ के ऑडिटीोरियम में एक राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया। इस वेबिनार का विषय प्राकृतिक पद्धति द्वारा मछली पालन था। राष्ट्र की पोषण संबंधी जरूरतों को पूरा करने में किसानों के योगदान को विशिष्ट तौर पर दर्शाने के लिए भारत सरकार ने इस राष्ट्रव्यापी अभियान को शुरुआत की है। इस अवसर पर सिफरी ने पर्यावरण संबंधी अखंडता को अक्षुण्ण रखते हुए खाद्य सुरक्षा और पोषण सुरक्षा में मछली पालन का योगदान प्रकाश डालने पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि इस पद्धति से पाली गयी मछलियाँ विशेष रूप से बच्चों और रुग्ण व्यक्तियों के स्वास्थ्य के लिए लाभकारी हैं। वेबिनार में 69 वैज्ञानिकों, 17 तकनीकी अधिकारी, 32 छात्रों और 21 किसानों सहित कुल 228 प्रतिभागियों ने भाग लिया जिसमें से 89 किसानों, मत्स्यिकी महाविद्यालयों के डीन ने ऑनलाइन इसमें भाग लिया।

सन्मार्ग में अपना व्याख्यान रखते डॉ. बी.के. दास

किसानों की भूमिका और प्राकृतिक पद्धति द्वारा मछली पालन के महत्व पर प्रकाश डालने के लिए इस वेबिनार का आयोजन किया। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक, डॉ. बी.के. दास ने अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया जिसके माध्यम से उन्होंने हमारी



आजादी का अमृत महोत्सव : सिफरी में राष्ट्रीय अभियान 'अन्नदाता देवो भव' पर प्राकृतिक पद्धति द्वारा मछली पालन पर वेबिनार

बैरकपुर • दबंग व्यूरी

भाकू अनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मत्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सिफरी) ने आजादी का अमृत महोत्सव के तहत 'अन्नदाता देवो भव' अभियान के अवसर पर आभासी मोड़ में 23 अप्रैल को एक राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया। इस वेबिनार का विषय था- प्राकृतिक पद्धति द्वारा मछली पालन। राष्ट्र की पोषण संबंधी

और पोषण सुरक्षा में मछली किसानों की भूमिका और प्राकृतिक पद्धति द्वारा मछली पालन के महत्व पर प्रकाश डालने के लिए इस

पारंपरिक कृषि पद्धति के महत्व के बारे में विस्तार से बताया। अपने व्याख्यान में डॉ. बीके दास ने 'अन्नदाता देवो भव' पर प्रकाश डाला।

मछली पालन के लाभ पर प्रकाश डाला। उन्होंने आगे कहा कि प्राकृतिक रूप से पालित मछलियों के आर्थिक रूप से अधिक

वेबिनार में 69 वैज्ञानिकों, 17 तकनीकी अधिकारी, 32 छात्रों और 21 किसानों सहित कुल 228 प्रतिभागियों ने भाग लिया जिसमें से 89 किसानों ने ऑनलाइन इसमें भाग लिया।



दैनिक **दबंग दुनिया** 28 अप्रैल 2022

निष्पक्ष नजर, निष्पक्ष खबर

देश का सबसे अधिक पठनीय हिन्दी अखबार

कचरे से कंचन मिशन के अंतर्गत सिफरी ने रेशम कीट अपशिष्ट से किया मत्स्य आहार विकसित

बैरकपुर, कोलकाता • दबंग व्यूरी

रेशम कीट प्युपा रेशम उद्योग के अपशिष्ट पदार्थ के तौर पर जाना जाता है। भारत में रेशम कीट के अपशिष्ट के पांच प्रकार होते हैं जिनमें सबसे अधिक महत्व से पाया जाता है। इन संपीठित अपशिष्ट पदार्थों को राजस्व ग्रानि के लिए एक रणनीति बनाने की आवश्यकता है। इस दिशा में भाकू अनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मत्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सिफरी), बैरकपुर ने केन्द्रीय तस्तर अनुसंधान और प्रशिक्षण संस्थान (सीटीआरटीआई), रांची के साथ 'मानव और जीव उपभोग तथा खानस्यक्तिक खाद के लिए रेशमकीट प्युपा उत्पादों का उपयोग और विविधीकरण' पर एक सहयोगी परियोजना का पहल किया है। हालाँकि सिफरी परियोजना पदार्थ से मानव आहार तैयार करने संबंधी पूरे अधिगम कार्य के साथ मई 2009 से प्रयासरत है जिसके अंतर्गत मध्याह्ना के अपशिष्ट पदार्थ तथा चूल्के

मोल्जर फ्लाई और रेशम कीट प्युपा से मत्स्य आहार तैयार किया जाता है। संस्थान ने मध्याह्ना के अपशिष्ट पदार्थ से एक फीड, सिफरी केजरी (उत्कृष्णक उन्मात्र, ब्रह्मह) का व्यवसायिककरण किया है।

संस्थान मुख्यालय, बैरकपुर में 26 अप्रैल को इस सहयोगी परियोजना के लिए एक समीक्षा बैठक आयोजित की गई। कार्यक्रम का शुभारंभ

सिफरी के निदेशक डॉ. वि.के. दास के स्वागत भाषण से किया गया जिसमें उन्होंने सर्वप्रथम डॉ. के. जेना, उपमहानिदेशक (मत्स्य विज्ञान) और डॉ. के. सत्यनारायण, निदेशक, सीटीआरटीआई, रांची और उपस्थित वैज्ञानिकों और मत्स्य किसानों का स्वागत किया। डॉ. दास ने चर्चित मछली प्रजातियों के लिए कम लागत वाली मछली फीड के संदर्भ में रेशम उद्योग अपशिष्ट के

प्रभावी उपयोग पर जोर दिया। परियोजना के प्रथम अन्वेषक के तौर पर डॉ. दास ने अपनी प्रस्तुति में परियोजना गतिविधियों का मूल्यांकन किया और चर्चित मछली प्रजातियों के लिए रेशम कीट प्युपा से बने आहार (एसएलएपीए) को व्यवसायिक तौर पर परीक्षण जैसी महत्वपूर्ण उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। इस संदर्भ में मूल चार प्रकार की फेलेट फीड तैयार की गई है। रेशमोन् - 1 मिमी (चारा मछलियों के लिए), रेशमी अमृत - 2 मिमी (अमृलिकाओं के लिए), रेशमीम गोल्ड - 3 मिमी (पोन मछलियों के लिए) और रेशमीन गोल्ड - 4 मिमी (पोन और ब्रूड मछलियों के लिए)। विकसित फीड का परीक्षण तिलारापि नाहलोटिकस और पीमियागोडोना हाइपोथैलमस मछलियों में किया गया। प्रयोगशाला में फीड

परीक्षण के तहत तुलनात्मक वृद्धि और उत्तरजीविता देखी गई। द्वारा खंड के माध्यम जलवायु में स्थिति चिंजनों में सर्वोत्तम मत्स्य आहार के साथ परीक्षण किया गया जिसमें विकास प्रदर्शन उच्च पाया गया। यह फीड कर्ण, शाकाहारी और सर्वाहारी मछली प्रजातियों में समान रूप से प्रयुगी पाया गया।

इस कार्यक्रम में मछली किसानों को उनके जल निकालों में परीक्षण के लिए 30 किलो चारा वितरित किया गया। अंतः प्रथम परीक्षण से रेशम कीट अपशिष्ट से सुरक्षित और प्रभावी मछली आहार से मछुआरों को आप को योग्यता किया जा सकता है। इस कार्यक्रम में सह-प्रधान अन्वेषक, डॉ. एमए. हसन, प्रणामाध्यक्ष, डॉ. डीके मीणा, वैज्ञानिक, डॉ. राहुल दास, वैज्ञानिक सहित परियोजना टीम ने भाग लिया। इस कार्यक्रम से सुदूरवर्ष तथा पश्चिम बंगाल के विभिन्न स्थानों से 30 प्रांतीय मछली किसानों ने भाग लिया।



प्रकाशन मंडल

प्रकाशक: बसन्त कुमार दास, निदेशक,

संकलन एवं सम्पादन: संजीव कुमार साहू, प्रवीण मोर्य, गणेश चंद्र, सुनीता प्रसाद एवं सुमेधा दास

फोटोग्राफी: सुजीत चौधरी एवं सगबंधित वैज्ञानिक।

भा.कू.अनु.प.-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मत्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, (आईएसओ 9001: 2015 प्रमाणित संगठन), बैरकपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल 700120, भारत

दूरभाष: +91-33-25921190/91; फैक्स: +91-33-25920388; ई-मेल: director.cifri@icar.gov.in; वेबसाइट: www.cifri.res.in

सिफरी मासिक समाचार में निहित सामग्री प्रकाशक की अनुमति के बिना किसी भी रूप में पुनः उत्पन्न नहीं की जा सकती है